Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 20, Issue No. 3, July-2023, ISSN 2230-7540

छोटानागपुर का उरॉव एवं मुण्डा आंदोलन का आर्थिक रूप से तुलनात्मक अध्ययन

संजय केरकेट्टा[1]*, डॉ. सावित्री सिंह परिहार[2]

[1] शोध विद्वान, रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (आरएनटीयू) मानविकी विभाग (इतिहास), भोपाल, मप्र.

[2] शोध निर्देशिका, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

सारांश - प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य है- झारखण्ड के छोटानागपुर क्षेत्र में हुए विद्रोह/आंदोलन के स्वारूप उपजी समस्याओं के कारण कबिलाई व्यवस्था में आयी आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन करना है।

उरॉव-मुण्डा जनजाति जो पूर्ण रूप से कबिलाई जीवन जी रही थी अंग्रेजों के आने के बाद यहाँ की भू-व्यवस्था एवं आर्थिक गतिविधियाँ पूरी तरह से चरमरा गयी। जिस वजह से उरॉव एवं मुण्डा जनजातियों में क्रमबद्ध तरीके से विद्रोह हुए। उनके बीच जो भी आंदोलन घटित हुए उससे उनकी आर्थिक गतिविधियाँ प्रभावित हो गयी और उनका जीवन तबाही के कगार तक पहुँच गया। इस दौरान मुण्डाओं में तमाड़ विद्रोह, सरदारी आंदोलन, बिरसा मुण्डा आंदोलन घटित हुआ और उरॉवों में कोल विद्रोह जिसमें मुण्डा सरदारों एवं हो जनजातियो की भूमिका थी एवं फिर टाना भगत आंदोलन घटित हुए। इस आंदोलन के माध्यम से उरॉवों एवं मुण्डाओं की आज की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को तुलनात्मक दृष्टि से समझा जा सकता है।

मुख्य शब्द - आर्थिक गतिविधि, भू-व्यवस्था विद्रोह/आंदोलन

----------X----------

भूमिका

प्रस्तुत शोध छोटानागपुर के उरॉव मुण्डा आंदोलन के परिणामस्वारूप उपजी आर्थिक समस्याओं एवं आर्थिक सुधारों का अध्ययन करना है। छोटानागपुर में ब्रिटिश कंपनी के आगमन के पश्चात् उरॉव एवं मुण्डा जनजातियों की कबिलाई व्यवस्था पर उसका व्यापक प्रभाव पड़ा कबिलाई व्यवस्था आदिम व्यवस्था से जुड़ी हुई थी जिसमें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक लाभ सन्निहित थे। कबिलाई व्यवस्था पर बाहरी दबाब का सीधा अर्थ था कि उनकी आर्थिक क्रियाकलापों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ना।

अंग्रेजों का छोटानागपुर में प्रवेश ने बाहरी किसान जातियों को भी प्रवेश करने का एक रास्ता दिया। अंग्रेजों ने बाहर से आये किसान जातियों का, साहूकारो और ठेकेदारों को संरक्षण प्रदान किया जिस कारण से वे जनजाति क्षेत्रों में प्रवेश करने लगे। जिस कारण जनजातिय व्यवस्थाओं से उनका सम्पर्क हुआ। जनजातिय व्यवस्थाओं से अनिभिज्ञता एवं अंग्रेजी शासन व्यवस्था के समर्थन के कारण उन्होंने आदिवासी भूमि एवं व्यवस्था पर अपना प्रभाव डालना शुरू कर दिया। जिस वजह से आदिम व्यवस्थाएँ पूरी तरह से चरमरा गयी। जिसका जनजातिय समुदाय ने प्रबल रूप से विरोध किया यह विरोध जल्द ही जन आंदोलन या विद्रोह का रूप धारण कर लिया। जिसके तहत मुण्डाओं में कोल विद्रोह, सरदारी आंदोलन, बिरसा आंदोलन, तमाड़ विद्रोह घटित हुए वहीं उरॉवों में कोल विद्रोह के महानायक बुद्धु भगत का आंदोलन एवं टाना भगत आंदोलन घटित हुए। वे सारे आंदोलन भूमि संबंधी समस्याओं को लेकर घटित हुए जिसका प्रमुख कारण यह था कि जब भूमि व्यवस्थाओं से अंग्रेजी शासन व्यवस्था, जमींदारों एवं बाहरी ताकतों ने खिलवाड़ करना चालू कर

दिया तो छोटानागपुर क्षेत्र में भूमि संबंधी समस्याएँ विकराल रूप धारण करने लगी।

आदिम जनजातीय समुदाय की आर्थिक व्यवस्था मुख्य रूप जंगल के संसाधनों एवं यहाँ पर स्थित भू-संपदा पर केंद्रित था। जिस वजह से बाहरी अतिक्रमण के फलस्वारूप उनकी भूमि का मूल व्यवस्था पूरी तरह से टूट गयी जिसका परिणाम यह हुआ कि उरॉव एवं मुण्डा जननजाति समुदाय के लोगो के पास भूखों मरने की नौबत आने लगी। जिसका परिणाम यह हुआ कि आदिवासी जन भावनाओं ने विद्रोह का रूप धारण कर लिया।

आंदोलन/विद्रोह का आर्थिक प्रभावः- 1830 से 1920 ई॰ के बीच मुण्डा एवं उरॉव जनजातियों के बीच छोटानागपुर के क्षेत्र में चरणबद्ध तरीके से विद्रोह हुआ इस श्रृखंला की कड़ी 1782-1820 तमाड़ विद्रोह, 1832 का कोल विद्रोह, 1830-32 वीर बुद्धु भगत विद्रोह और 1860-1895 सरदारी आंदोलन, 1872-1900 बिरसा मुण्डा आंदोलन और 1914-19 टाना भगत आंदोलन घटित हुए, यह सारा आंदोलन छोटानागपुर के क्षेत्र में ही घटित हुए।

उपरोक्त सभी आंदोलन मुण्डा जनजातियों एवं उरॉव जनजातियों के बीच में घटित हुए। आंदोलन की पृष्ठभूमि को अगर समय और भौगोलिकता के हिसाब से देखा जाय तो वे सारे आंदोलन ब्रिटिश कम्पनी के प्रभाव एवं उपनिवेशवादी नीति के महज तीन दशक के बाद हुए, जब राजा महराजा भी ब्रिटिश कम्पनी का प्रतिरोध करने से डरते थे उस समय छोटानागपुर के भौगोलिक क्षेत्र में एक शक्तिशाली प्रतिरोध का स्वारूप चरण बद्ध तरीके से देखने को मिला। विद्रोह का प्रमुख चरण भू-व्यवस्था से छेड़-छाड़ थी, कबिलाई भू-व्यवस्था से छेड़-छाड़ के कारण जनजातियों की आर्थिक व्यवस्थाओं में काफी गिरावट आयी। जिसकी वजह से उनको जीवन यापन में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा रहा था। जनजातियों को जमीनों से बेदखल कर दिया गया उनको घर से बेघर कर दिया गया जिस कारण उन्होंने आपस में मिलकर आंदोलन/विद्रोह की रणनीतियाँ बनायी और उन्होंने औपनिवेशिक शक्तियों का प्रबल रूप से प्रतिरोध किया।

अंग्रेजी औपनिवेशिक व्यवस्थाओं यह प्रबल प्रतिरोध सुनियोजित तो था ही लेकिन असभ्य कहें जाने वाले जनजातियों से इस प्रकार के आंदोलन की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। छोटानागपुर क्षेत्र जो आज के झारखंड राज्य का एक भौगोलिक क्षेत्र है वहाँ मुण्डा जनजातिय का प्रभाव सबसे ज्यादा था, साथ ही उनके पड़ोसी एवं साथ रह रही जनजातियों के बीच आपसी सोहदर्य बहुत ही अच्छा था। मुण्डाओं पर पड़ने वाला प्रभाव का सीधा मतलब यह था कि इसका प्रत्यक्ष प्रभाव भी उरॉव जनजातियों पर पड़ना। उसी वजह से जो आंदोलन उरॉव जनजाति में या मुण्डा जनजाति में घटित हुआ उसका समर्थन एक दूसरे को पूरी तरह से मिल रहा था साथ ही इन जनजातियों के साथ रह रही जातियों ने भी विद्रोह/आंदोलन में अपनी उपस्थिति दर्ज की।

औपनिवेशिक हस्ताक्षेप के कारण उनसे भारी मात्रा में कर लिया जाने लगा। कर नहीं चुकाये जाने के कारण उनकी भूमियों की प्रकृति को बदल कर अन्य किसान जातियों को बेच दिया गया। उनसे बेठ-बेगारी कराया जाता साथ ही उनका अपमान किया जाता। उनको जमींदारो एवं अन्य भूस्वामियों के यहाँ नौकर के रूप में खेतों में मजदूरी करायी जाने लगी। इस से यह पता चलता है कि उनकी आर्थिक स्थिति में काफी गिरावट आ गयी थी।

कोल विद्रोह के समय भू संबंधी समस्याओं को लेकर जो विद्रोह हुआ था। विद्रोहियों की समाप्ति पर विद्रोहियों के जमीनों एवं घरों पर औपनिवेशिक शक्तियों के द्वारा कब्जा कर लिया गया। उनकी सारी संपतियों को हड़प लिये जाने के कारण विद्रोहियों के परिवार के लोगो के अलावा अन्य लोग भी दर-दर भटकने को मजबूर होने लगे उनकी हालत बद से बदतर हो गयी।

सरदारी आंदोलन के दौरान आंदोलनकारियों ने संयम का परिचय दिया ईसाई मिशनरियों के प्रभाव के कारण यह आंदोलन ज्ञापन और मांग पत्र पर आधारित हो गया था। जनजातियों ने कानूनी रास्ता अपनाया और बहुत बड़ी राशि उन्होंने खर्च की पर उनके भोलेपन का फायदा उठा कर उन्हें ठग लिया गया। कोल विद्रोह के समय से ही इनकी आर्थिक स्थिति ठीक नही थी लेकिन अब इनकी आर्थिक स्थिति ओर भी खराब हो गयी थी जिसका फायदा उठाकर जनजातीय युवक युवतियों को सब्जबाग दिखाकर असम एवं जलपायगुड़ी के क्षेत्रों में चाय के बगानों में काम करने के लिये ले जाने लगा। आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण उराॅव एवं मुण्डा जनजाति के लोग भूमि संबंधी सुधार होने की ललक में ईसाई धर्म को भी स्वीकार करना चालु किया लेकिन इसका कोई फायदा नहीं हुआ जिस कारण वे अपनी लुटी हुई अवस्था को देख खुद को ही कोस रहे थे।

www.ignited.in

उरॉव विद्रोह में वीर बुद्धु भगत के द्वारा भूमि व्यवस्था पर बाहरी हस्ताक्षेप एवं लुट को लेकर कोल विद्रोह के जन नायक के रूप में आंदोलन को संचालित किया क्योंकि अंग्रेज समर्थित जमींदार, साहूकारों एवं अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारियों के साथ मिलकर उनका बेईतहा आर्थिक शोषण किया जा रहा था। आंदोलन खत्म होने के बाद विद्रोह के समर्थकों की सारी संपति को हड़प लिया गया। जिस वजह से उराॅवों की आर्थिक स्थिति भी काफी खराब हो गयी।

बिरसा मुण्डा आंदोलन के समय में भी भू-सुधारों एवं जनजातीय आबादी पर मनमाना कर व्यवस्था लागु करने एवं जनजातियों को विभिन्न प्रकार के ऐसे क्रियाकलाप करने को मजबूर करना जिससे उनका आर्थिक रूप से शोषण किया जाता था। काम के बदले जनजातियों को किसी भी प्रकार का मजदुरी नहीं दिया जाता था। यह प्रक्रिया एक लंबे समय से चला आ रहा था लेकिन सबसे ज्यादा भूमि पर औपनिवेशिक ताकतों के दबाब के कारण मुण्डा जनजातियों का आर्थिक शोषण हो रहा था।

उरॉवों में 1914-15 ई॰ में जमीन संबंधित मल्कियत, औपनिवेशिक कर, बेगार एवं कुली का काम आदि का विरोध टाना भगत आंदोलन में दिखलायी पड़ती है। अहिंसक एवं धार्मिक आंदोलन में ऐसे तत्व भी सम्मिलित थे जिसकी वजह से आदिवासियों की आर्थिक स्थिति पर व्यापक असर पड़ा जनजातीय आर्थिक व्यवस्था कृषि एवं पशुपालन आदि का विरोध करने के कारण। उरॉव जनजातियों को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था।

अंग्रेजों का झारखंड में प्रवेश से पूर्व यहाँ की जनजातियाँ अपनी आदिम कबिलाई व्यवस्था के साथ उन्होने समांजस्य स्थापित कर लिया था, लेकिन जैसे ही औपनिवेशिक ताकतों का छोटानागपुर के क्षेत्र में हस्ताक्षेप हुआ, और बाहरी दुनिया के साथ सम्पर्क के कारण उनका सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक जीवन पूरी तरह से प्रभावित हो गया। प्रभावित होने के कारण उनका सामाजिक हित और आर्थिक हित पूरी तरह से प्रभावित हो गया। जिस से वे संगठित होकर उनका प्रबल विरोध करने लगे।

कोल विद्रोह के कारण ''1833 में बंगाल ''विनियम -13 के तहत 1837 में विलकिंसन के नियम के तहत'' कोल्हान स्टेट'' स्थापित किया गया इसी विनियम के तहत भारतीय संविधान में जनजातियों के हित के लिए 5 वी अनुसूचि का प्रवधान किया गया जो जनजातीय आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक हित को साघने का कार्य करता है। सरदारी आंदोलन के परिणाम स्वारूप ब्रिटिश सरकार ने जनजातियों की आर्थिक हित के सुधार के लिये ग्रीमले के नेतृत्व में 1890 में सभा की गयी जिसमें बेठ-बेगारी पर विमर्श किया गया एवं इसी के तहत 1893-95 के दौरान सरदारों को छोटानागपुर खास और पोड़ाहाट के क्षेत्रों में कर वसूल करने का अधिकार दिया गया।

बिरसा मुण्डा आंदोलन के परिणामस्वारूप 1908 ई॰ को जनजातियों के आर्थिक हित को ध्यान में रखकर ब्रिटिश सरकार ने छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम पारित किया वही उराॅवों के टाना भगत आंदोलन -1914 -15 के परिणामस्वारूप, 1947 में ''टाना भगत भूमि वापसी अधिनियम'' लागु किया गया ताकि उनकी हड़पी हुई भूमि वापस हो सके।

जनजातियों के जब आर्थिक हित व्यापक रूप से प्रभावित हुए तो उन्होंने औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ संगठित रूप में विद्रोह किया। जब ब्रिटिश सरकार को जनजातियो के विरोध का कारण समझ में आया तो उन्होने व्यापक रूप से आर्थिक सुधार कानून बनाए और यह कानून आज भी झारखंड राज्य के जनजातियों के आर्थिक हित को निर्धारित करता है।

साहित्य पुनरावलोकन

- **देवी महाश्वेता:** जंगल के दावेदार; आदिवासी संघर्ष की महागाथा; पेपर बैंक राजकमल प्रकाशनः मैं बिरसा मुण्डा के जीवन को महाश्वेता देवी ने उपन्यास के रूप में सम्पूर्ण चित्रण किया है। महाश्वेता देवी ने बिरसा मुण्डा के जीवन को उपन्यास के रूप में रचित करने के लिए एतिहासिक तथ्यों का समावेशन बड़ी ही सहजढंग से किया है। उन्होने उस समय की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि का बहुत ही सरलता एवं आर्थिक ढंग से चित्रण करने का कोशिश किया है। जिसमें बिरसा मुण्डा का विद्रोह का सम्पूर्ण चित्रण प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत किया है।
- **दास गुप्ता संगीताः** रिर्कोडिंग एवं वल्ड; दा टाना भगत मुवमेंट 1914-19; में टाना भगत आंदोलन के आर्थिक पृष्ठभूमि का उल्लेख किया है। जिसमें उन्होने पूर्वोत्तर में छोटानागपुर क्षेत्र के जनजातियों का टाना भगत आंदोलन के समय की आर्थिक व्यवस्था का चित्रण किया साथ ही साथ छोटानागपुर में टाना भगत आंदोलन के

परिणामस्वारूप उपजी आर्थिक समस्याओं पर भी प्रकाश डालने का कार्य किया है।

- **मीणा प्रसाद केदारः** आदिवासी विद्रोह (विद्रोह परंपरा और साहित्यिक अभिव्यक्ति की समस्याएँ); सम्पूर्ण भारत में प्रमुख जनजातीय आंदोलन की झांकी प्रस्तुत की है। मीणा जी ने छोटानागपुर के सभी जनजातीय आंदोलन को प्रमुखता से रेखांकित किया है। उन्होने छोटानागपुर के विद्रोह/आंदोलनों की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि पर व्यापकता से प्रकाश डाला है।
- **कुवंर कृष्ण गोपी:** दा लाईफ एण्ड टाइम्स ऑफ बिरसा मुण्डा; ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली, 2020; में बिरसा का आरंभिक जीवन से राजनीतिक जीवन, समाज सुधार आंदोलन और उसमें निहित आर्थिक तत्वों का भी समावेशन किया है।
- **सिंह के. सुरेश**; **बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन (1872-1901);** में सुरेश सिंह ने बिरसा मुण्डा जी के बाल्यकाल से लेकर एक आंदोलनकारी बनने तक के सफर को बहुत ही तथ्यात्मक ढंग से वर्णन किया है। उन्होने कोल विद्रोह सरदारी आंदोलनों के प्रसंग को भी इस पुस्तिका में उठाया है। औपनिवेशिक शासन व्यवस्था में उपजी समस्याएँ जिसमें धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों का भी संपूर्णता से प्रकाश डाला है।

उद्देश्य

छोटानागपुर के उरॉव एवं मुण्डा आंदोलन का अगर तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया जाए तो उनकी भूमि संबंधित समस्याओं से उपजी समस्या के कारण उनकी समुदायिक जीवन में सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक रूप से व्यापक प्रभाव पड़े इसके उद्देश्य निम्नलिखित है।

- छोटानागपुर की कबिलाई भूमि व्यवस्था के महत्वपूर्ण पक्षों की जानकारी प्रस्तुत करना।
- छोटानागपुर के मुण्डा एवं उरॉव जनजाति की सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- मुण्डा एवं उरॉव विद्रोह की प्रकृति एवं दोनों के बीच की कड़ी की पहचान करना।
- छोटानागपुर के मुण्डा और उरॉव जनजाति की अन्य जनजातियों की आर्थिक व्यवस्थाओं में संबंधित स्थापित करना।
- विद्रोह के परिणामस्वारूप औपनिवेशिक शासन के द्वारा किए गए भू-सुधारों की पहलुओं को उजागर करना।
- मुण्डा और उरॉव विद्रोह की चरणबद्ध आंदोलन के बीच संबंध स्थापित करना।
- ब्रिटिश हुकुमत के दबाव से छोटानागपुर के जनजातियों के प्रवासन का अध्ययन करना।
- छोटानागपुर के उरॉव, मुण्डा विद्रोह का भारत के अन्य जनजातीय आंदोलन से तुलना स्थापित करना।

परिकल्पना

- छोटानागपुर में उरॉव और मुण्डा विद्रोह की प्रकृति को जानना।
- उरॉव, मुण्डा विद्रोह के परिणामस्वारूप उपजी आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं को उजागर करना।
- नयी पीढ़ी को छोटानागपुर में हुए उरॉव, मुण्डा विद्रोह की प्रकृति एवं उसकी परिणाम को जानने के लिए प्रेरित करना।
- उरॉव, मुण्डा आंदोलन की वैचारिक क्षमता एवं संगठनिक क्षमता को जानने के लिए प्रेरित करना।
- जनजातीय विद्रोह एवं आंदोलन के प्रति नयी पिढ़ी को प्रेरित करना।

शोध का महत्व

उरॉव, मुण्डा आंदोलन का सम्पूर्ण अध्ययन से छोटानागपुर में हुए जनजातीय आंदोलनों का तुलनात्मक रूप से अध्ययन किया जा सकता है, साथ ही राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में छोटानागपुर के आंदोलन की सार्थकता को समझा जा सकता है। इस शोध के माध्यम से निम्नलिखित महत्वपूर्ण तथ्य सामने लाए जा सकते हैः-

- जनजातीयों की आदिम सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को सही रूप में स्पष्ट किया जा सकता है।
- जनजातीय आंदोलन की पृष्ठभूमि को जानने के लिए लोगो के रूझान को बढ़ाया जा सकता है।
- जनजातीय विद्रोह की अवधारणा को सही रूप से स्पष्ट किया जा सकता है।
- उरॉव एवं मुण्डा विद्रोह के परिणाम स्वारूप छोटानागपुर में आई आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का तुलनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

www.ignited.in

- छोटानागपुर के उरॉव एवं मुण्डा विद्रोह को समझकर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उसका समावेश किया जा सकता है।

शोध विधि

- वर्णनात्मक विधि का प्रयोग कर उरॉव एवं मुण्डा विद्रोह पर लिखित पुस्तक एवं अन्य दस्तावेज, पाण्डुलिपि, एवं समकालीन पत्रिकाओं एवं केस डायरी से तथ्यों को एकत्रित करना।
- पर्यवेक्षण विधि द्वारा जनजातीय आंदोलन एवं उस से पूर्व घटित आर्थिक गतिविधियों को तत्कालीन लेखको के दस्तावेजो एवं उनकी पांडुलिपियों का अध्ययन करना।
- एतिहासिक विधि के माध्यम से तत्कालीन दस्तावेजो एवं अन्य उपलब्ध दस्तावेजो के माध्यम से तथ्यात्मक रूप से अध्ययन करना।

विश्लेषण तथा व्याख्या

छोटानागपुर के उरॉव, मुण्डा विद्रोह ने तत्कालीन समाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को समावेश करने का कार्य किया है। जिस से औपनिवेशिक शासन व्यवस्था ने आर्थिक सुधार के कार्य छोटानागपुर के क्षेत्र में आदिवासी हितों को ध्यान में रखकर किया जो आज भी प्रसांगिक है।

औपनिवेशिक ब्रिटिश सरकार के द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था के कारण उपजी समस्याओं को जानने की कोशिश करना और आदिम सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं के प्रति समझ स्थापित करना।

छोटानागपुर की जनजातीय विद्रोहों को उरॉव, मुण्डा विद्रोह के संदर्भ में तुलनात्मक रूप से अध्ययन करने को प्रेरित करना। जिस से नये युवा पीढ़ी में आंदोलन के महत्व एवं उस से संबंधित गतिविधियों की जानकारी प्रदान करने की समक्षता प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष

छोटानागपुर का उरॉव, मुण्डा विद्रोह जो 1830 से 1920 ई॰ के बीच में कड़ीबद्ध तरीके से घटित हुआ यह कोई अनायास होने वाला घटित घटना नहीं है। इसके पीछे आदिम कबिलाई व्यवस्था और औपनिवेशिक शासन व्यवस्था का वैचारिकी का संघर्ष के रूप में स्पष्ट दिखलायी पड़ता है।

ब्रिटिश शासन व्यवस्था ने कबिलाई संस्कृति की व्यवस्थित ढंग को धाराशायी कर दिया। जिसका परिणाम यह रहा कि औपनिवेशिक शक्ति को प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा। औपनिवेशिक आधुनिक मा◌ॅडल को भी अपनी शासन व्यवस्था में परिवर्तन कर जनजातियों के लिए नये कानून को बनाने के लिए उनको प्रतिबध होना पड़ा।

संदर्भ ग्रंथ

सिंह के॰ एस॰ लेख-ट्राइबल पीजेंटरी, मिलेनरियनिज्म, अनार्किज्म एंड नेशनालिज्मः ए केस स्टडी ऑफ दा ताना भगत्स इन छोटानागपुर, 1914

दासगुप्ता संगीताः रिऑडरिंग ए वल्ड-द ताना भगत मूवमेंट, 1914-1919; एस गोपाल (संपादक): स्टडीज इन हिस्ट्री, वोल्युम-15, 1999

गौंझू गिरीधारी रामः ताना आंदोलन के प्रवर्तकः जतरा ताना भगत; केदार प्रसाद मीणा (संपादक)

महतो शैलेंद्रः झारखण्ड की समरगाथा; निधि बुक्स, दिल्ली, 2011

मीणा केदार प्रसादः आदिवासी विद्रोह - विद्रोह परंपरा और साहित्यिक अभिव्यक्ति की समस्याएँ; अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, 2015

देवी महाश्वेताः जंगल के दावेदार- आदिवासी संर्घष की महागाथा; बी के आफसेट, दिल्ली; राधाकृष्ण पेपरबैक्स

एन्ट्री नं॰ 178, कन्फरमैन्डन, रजिस्टर, जी॰ ई॰ एल॰ मिशन, चाईवासा, 1868

एस॰ सी॰ राय, दी इफैकट्स ऑन दी एबॉरजिनिल्स ऑफ छोटानागपुरः ऑफ देयर कन्टैक्ट विथ वैस्टर्न सिविलजेशन, जर्नल ऑफ बिहार एण्ड ओड़िसा रिसर्च सोसायटी, 17 पार्ट,

चैधरी पी॰ सी॰ रॉयः हजारीबाग ओल्ड रिकार्ड, 1761-1878; सेन्ट्रल सेकेट्रीएट लाइब्रेरी 1957

कुमार एन॰ बिहार डिस्ट्रिक गजेटियर राँची सेन्ट्रल सेकेट्रीएट लाइब्रेरी पटना 1970